भारत और यूरोप: नए आधार तैयार करने की संभावनाएं

डॉ. दिनोज कु. उपाध्याय*

भूमिका

यूरोप के साथ भारत की बातचीत को बहुप्रतीक्षित प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए, प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी ने 9 से 12 अप्रैल, 2015 के दौरान यूरोपीय संघ (EU) के दो प्रमुख सदस्य राष्ट्रों - फ्रांस और जर्मनी - का दौरा किया। उनकी यात्रा भारत-यूरोपीय संघ (EU) कार्यनीतिक भागीदारी में आई शिथिलता और भारत-यूरोपीय संघ शिखर सम्मेलन के हाल ही में रद्द हो जाने की पृष्ठभूमि में संपन्न हुई। रिपोर्ट के अनुसार, हालांकि, नई दिल्ली ने भारत-यूरोपीय संघ शिखर सम्मेलन आयोजित करने की प्रक्रिया की शुरूआत की, परन्तु तारीखों के संबंध में भारत के सुझाव पर यूरोपीय संघ (EU) का कोई जवाब न मिलने के कारण यह रद्द हो गया था।[1] यूरोपीय आयोग द्वारा गिनाए गए "संभारतंत्रीय कारणों"[2] की संभावना कम है, क्योंकि रिर्पोटों से संकेत (मिलता) है कि इतालवी नौसैनिकों के मुद्दे और 'भविष्य की व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं' के कारण यह शिखर सम्मेलन रद्द हुआ। यूरोपीय संघ (EU) के इस रवैये की यूरोपीय संघ (EU) के ही राजनीतिक प्रतिष्ठानों में आलोचना हुई। नीना गिल, उपाध्यक्ष, भारत संबंध प्रतिनिधिमंडल, यूरोपीय संसद, ने कहा, "(भारत-यूरोपीय संघ) संबंधों में तनिक भी गिरावट यह देखते हुए अतुलनीय रूप से दुर्भाग्यपूर्ण है कि वैश्विक परिदृश्य में भारत बड़ा महत्व प्राप्त करने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है।"[3] विद्वानों का संकेत है कि इतालवी नौसैनिकों के मामले पर यूरोपीय संघ (EU) का रवैया भारत-यूरोपीय संघ भागीदारी में रूकावट का कारण बना है।[4]

एक अवलोकन यह भी है कि भारत-यूरोपीय संघ कार्यनीतिक भागीदारी 'अपने स्तर के अनुरूप कार्य नहीं'[5] कर रही है और भारत तथा यूरोपीय संघ (EU) परस्पर स्वीकार्य समाधान पर पहुंचने में समर्थ नहीं हो पा रहे हैं। आशा के अनुरूप प्रधानमंत्री मोदी के फ्रांस और जर्मनी दौरे में 'द्विपक्षीय'[6] एजेंडा अधिक था,

लेकिन यूरोपीय संघ (EU) के दो प्रमुख सदस्य राष्ट्रों के साथ भारत-यूरोपीय संघ कार्यनीतिक भागीदारी की वर्तमान स्थिति पर चर्चा करना (भी) उपयुक्त था। भारत को चाहिए कि वह अपने यूरोपीय कार्यनीतिक भागीदारों को बताए कि इसकी (भारत की) न्यायिक प्रक्रिया का सम्मान किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, इतालवी नौसैनिक का मामला न्यायालय में विचाराधीन है। इसलिए, न्यायालय-बाह्य कार्यनीतिक हस्तक्षेप कानून के शासन और निष्पक्ष न्याय प्रणाली की उन विशेषताओं को सीमित कर देगा, जो भारत-यूरोपीय संघ (EU) संबंधों का मानक आधार होना चाहिए। इसी पृष्ठभूमि में, इस मुद्दा सार में यह तर्क दिया गया है कि प्रधानमंत्री मोदी की यूरोप यात्रा से आपसी रिश्तों में नए आधार तैयार करने की संभावनाएं पैदा हुई हैं।

वृहत्तर आर्थिक भागीदारी पर जोर

आर्थिक भागीदारी का विस्तार करना तथा उन्नत प्रौद्योगिकी साझा करना प्रधानमंत्री मोदी के एजेंडे में प्रमुख थे। इन राष्ट्रों के अपने दौरे के संबंध में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने स्वयं ट्वीट किया, "फ्रांस, जर्मनी और कनाडा का मेरा दौरा भारत के आर्थिक एजेंडे का समर्थन करने और हमारे युवाओं के लिए रोजगार का सृजन करने पर केन्द्रित है।"[7] सत्ता में आने के पश्चात प्रधानमंत्री ने देश में बेहतर व्यापार संभावनाओं के अनुकूल वातावरण तैयार करने और विकास में फिर से तेज़ी लाने के लिए अपने सुधारात्मक ऐजेंडे पर जोर दिया है। नरेन्द्र मोदी ने एक बार तर्क दिया था, "मेरा विश्वास है कि सुदृढ़ अर्थव्यवस्था एक प्रभावी विदेश नीति का संचालक है ----- हमें स्वयं अपने घर को व्यवस्थित करना है ताकि विश्व हमारी ओर आकर्षित हो सके।"[8] व्यापक 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम में आर्थिक विकास में पुन: तेजी लाने, जनसांख्यिकीय संसाधनों का उपयोग करने के साथ-साथ विशाल व्यापार संभावनाओं तथा अंतर्राष्ट्रीय सहयोग का द्वार खोलने की अपार क्षमता है। दूसरी ओर, यूरोपीय संघ (EU) तथा इसके सदस्य राष्ट्रों के बाह्य संबंधों में भू-आर्थिक कारक की प्रधानता को और अधिक संवर्धित किया गया है; यूरोपीय संघ (EU) के सदस्य राष्ट्रों के घरेलू आर्थिक परिदृश्य - आंतरिक मितव्ययिता उपाय - बाह्य व्यापार संवर्धन की प्रेरणा देते हैं।[9]

समसामयिक विदेश नीति के वृहत्तर पारिस्थितिकी तंत्र में उन्होंने 'लुक ईस्ट, लिंक वेस्ट' नीति पर ठीक ही जोर दिया है, जो वैश्विक महत्व श्रृंखला,[10] वृहत्तर तथा सतत निवेश और उन्नत स्तर के प्रौद्योगिकीय सहयोग में देश के अधिकाधिक एकीकरण की प्रेरणा देती है। भारत की आलोचना दुरूह अफ़सरशाही प्रक्रिया और 'लचर नीति' के लिए की गई है। आज, देश के व्यापारिक वातावरण में गुणकारी परिवर्तन को भली-भांति मान्यता/पहचान मिली है।[11] साख दर-निर्धारण एजेंसी, मूडीज ने भारत का दर्जा 'स्थिर' से बढ़ाकर 'सकारात्मक'[12] कर दिया है। ब्रिसबेन में जी-20 शिखर सम्मेलन के दौरान, यूरोपीय

परिषद के तत्कालीन अध्यक्ष, हरमन वान रोम्पू (बीटीआईए) ने भारत-यूरोपीय संघ व्यापक व्यापार एवं निवेश करार (बीटीआईए) पर चर्चा करने के साथ-साथ यह भी चर्चा की कि कैसे यह 'राजनैतिक इच्छाशक्ति की कमी' के कारण ठप हो गया था। आर्थिक विकास को आगे बढ़ाने और भविष्योन्मुख दृष्टिकोण सृजित करने के लिए अपनी सरकार द्वारा किए गए प्रमुख सुधार पहलों का उल्लेख करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, "परिवर्तन की बयार चल पड़ी है। अपने (फायदे) के लिए इसका लाभ उठाएं।"[13] पश्चिम में भी भारत को 'वैश्विक अर्थव्यवस्था में प्रमुख स्थल'[14] माना जाता है।

भारत इन देशों के साथ पहले ही एक जीवंत तथा सक्रिया संबंध साझा करता है। भारत और फ्रांस अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, असैनिक परमाणु सहयोग से लेकर रक्षा क्षेत्र तक अनेक क्षेत्रों में अपने सहयोग बढ़ा रहे हैं। इस यात्रा के दौरान अंतरिक्ष सहयोग, पर्यटन, अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद, स्मार्ट शहर, रक्षा विनिर्माण आदि सहित अनेक मुद्दों पर विचार-विमर्श किए गए। 'मेक इन इंडिया' पहल के प्रमुख तत्व के रूप में, रक्षा विनिर्माण सहयोग का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। एमएमआरसीए सौदे के संबंध में, समायोजन तथा जीवन चक्र लागत तथा प्रौद्योगिकी अंतरण अन्य दावेदारों को अपात्र बनाने में महत्वपूर्ण मुद्दे थे। रफाल सौदे पर बातचीत इन्हीं मुद्दों पर अटक गई है। भारत ने अब फ्रांस से प्रयोग हेतु तैयार स्थिति वाले 36 लड़ाकू विमान खरीदने का निर्णय किया है। भारतीय वायुसेना की तत्काल प्रचालन आवश्यकताओं पर विचार करते हुए भारत ने रफाल युद्धक विमानों की शीघ्र आपूर्ति के लिए दोनों सरकारों के बीच सौदा करने का निर्णय लिया।[15] नई दिल्ली और पेरिस ने परमाणु ऊर्जा सहयोग की दिशा में भी एक कदम आगे बढ़ाया। दोनों देशों ने मूल्य तथा जोखिम के प्रावधानों के संबंध में जैतापुर संयंत्र के सभी तकनीकी पहलुओं पर स्पष्टता लाने का प्रयास किया।[16] भारत ने फ्रांसीसी व्यापारियों को भारत में निवेश करने हेतु आकर्षित करने का भी प्रयास किया। हालांकि ये आंकड़े जापान के आंकड़ों जैसे ऊंचे नहीं हैं, फिर भी फ्रांस ने भी इस देश में दो अरब यूरो का निवेश करने की घोषणा की है।[17] फ्रांसीसी राष्ट्रपति ओलॉद ने अवसंरचना तथा शहरी विकास में भागीदार बनने के लिए अपना समर्थन दिया।[18]

जर्मनी यूरोप में भारत का सबसे बड़ा व्यापार भागीदार और भारत के लिए उन्नत प्रौद्योगिकी का एक प्रमुख स्रोत है। यह वर्ष 2000 से भारत में 8वां सबसे बड़ा विदेशी प्रत्यक्ष निवेशक रहा है।[19] अगस्त 1991 के बाद से, भारत में कुल जर्मन निवेश लगभग 3.9 अरब डॉलर हुआ है।[20] जब भारत ने 1990 के दशक के प्रारंभ में नई आर्थिक प्रक्रिया के मार्ग पर कदम रखा तो बर्लिन वृहत्तर भारत-यूरोपीय संघ (EU) फ्रेमवर्क में एक 'महत्वपूर्ण घटक' के रूप में उभरा।[21] आज आर्थिक सुधारों की शुरूआत के दो दशकों से अधिक समय के बाद जर्मनी को विकास की नई गति प्राप्त करने और परिणामस्वरूप सामाजिक-आर्थिक

बदलाव लाने के भारत के नवीन प्रयासों में एक महत्वपूर्ण भागीदार माना जाएगा। 'मेक इन इंडिया' पहल विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने के नए अवसर प्रदान करता है। जर्मनी के पास मजबूत प्रौद्योगिकीय आधार और जीवंत खोजी प्रणाली है जो इसके औद्योगिक विकास को तेज गति प्रदान करता है। अनुसंधान तथा विकास पर जर्मनी का व्यय इस पर यूरोपीय संघ (EU) के औसत (व्यय) से अधिक है। जर्मनी के लघु तथा मध्यम आकार के उद्यम - 'Mittelsand' - अत्यंत उत्पादक हैं और रोजगार के विशाल अवसर उपलब्ध कराते हैं। निवेश के अलावा, प्रौद्योगिकी, क्षमता निर्माण, अनुसंधान एवं विकास तथा एसएमई के संवर्धन में भारत-जर्मनी सहयोग भारतीय विनिर्माण उद्योग में विकास के अवसरों को बढ़ाने और देश में ज्यादा रोज़गार के सृजन में महत्वपूर्ण होगा। यूरोपीय देशों ने साइबर सुरक्षा, नए खोजों, स्टार्ट-अप, डिजिटल शासन, ई-गवर्नेन्स आदि के क्षेत्र में ठोस प्रगति की है, जिसमें भारत उनके अनुभवों से लाभ उठा सकता है।[22] प्रधानमंत्री मोदी और जर्मन चांसलर एंजेला मर्केल दोनों ने दोनों देशों के बीच आर्थिक सहयोग और बढ़ाने का आह्वान किया। यह उल्लेख करना उचित होगा कि जर्मनी-भारत व्यापार वर्ष 2014 में 15.9 अरब यूरो था, जो उसी वर्ष जर्मनी और चीन के बीच होनेवाले व्यापार से बहुत पीछे है, जो अनुमानत: 154 अरब यूरो के करीब था।[23] जर्मन चांसलर मर्केल ने भारत-यूरोपीय संघ मुक्त व्यापार करार (एफटीए) पर पुन: वार्ता प्रारंभ करने का पक्ष लिया। ऐसा माना जाता है कि भारत और यूरोपीय संघ (EU) के बीच मुक्त व्यापार करार (एफटीए) में भारत और यूरोपीय संघ (EU) के बीच व्यापार विस्तार की क्षमता होगी। भारत ने भी मुक्त व्यापार करार (एफटीए)[24] पर वार्ताएं शुरू करने की तत्परता दिखाई है, लेकिन, आनन्द मेनन का तर्क है कि इसे अंतिम रूप दिये जाने की संभावनाएं 'अत्यंत क्षीण' प्रतीत होती हैं।[25]

विनिर्माण क्षेत्र को प्रोजेक्ट करने के भारत के आह्वान के पीछे न केवल अनुकूल घरेलू वातावरण है, बल्कि यह वैश्विक विनिर्माण की बदलती गतिशीलता के भी अनुकूल है। उदाहरण के लिए झाओ जेन चेंग, निदेशक, दक्षिण एशिया अध्ययन, संघाई अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान का तर्क है, "---- चीन में बढ़ती श्रमिक लागतों और कठोर पर्यावरण विनियमों ने उत्साही निवेशकों को बाहर निकलकर देखने और विशेषकर लघु तथा मध्यम आकार के व्यापारों के लिए अधिक इच्छित स्थान के रूप में भारत पर विचार करने के लिए बाध्य किया है। साथ ही, भारत में अंग्रेजी के हो रहे व्यापक प्रयोग ने भी उनकी रूचि बढ़ा दी है---।"[26] वैश्विक निवेशकों को नई दिल्ली का राजनैतिक संदेश मुखर तथा स्पष्ट है कि 'मेक इंन इंडिया' सरकार के लिए 'नारा मात्र' नहीं है। वैश्विक व्यापार समुदाय को सर्वोच्च राजनीतिक स्तर से आश्वासन प्राप्त हो रहा है

कि विनियामक व्यवस्था अत्यधिक पारदर्शी, उत्तरदायी तथा स्थिर है।[27]

'लिंक वेस्ट' के कार्यनीतिक आयाम

प्रधानमंत्री मोदी के इस दौरे में आर्थिक तथा वाणिज्यिक मुद्दे प्रमुखता से छाये थे। रणनीतिक मुद्दे तथा पश्चिम एशिया से अफगानिस्तान को मिलने वाली मौजूदा सुरक्षा तथा मानवीय चुनौतियां भी यूरोप के साथ संबंधों में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। यद्यपि आर्थिक भागीदारी भारत-यूरोप संबंधों में 'प्रमुख' होगी, परंतु नई दिल्ली को वैश्विक स्तर पर अधिकाधिक सहक्रियाएं विकसित करने के साथ-साथ क्षेत्रीय मानवीय तथा सुरक्षा चुनौतियों से निपटने की ओर भी ध्यान देते रहना चाहिए। भारत इस संबंध का आर्थिक भागीदारी से आगे विस्तार करने का भी इच्छुक है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता प्राप्त करने के लिए फ्रांस का समर्थन महत्वपूर्ण होगा, जिससे वैश्विक मंचों पर भारत को ज्यादा बड़ी भूमिका मिलने में आसानी होगी। भारत लंबे समय से अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद का शिकार रहा है। भारत तथा यूरोप के बहुविध सांस्कृतिक समाज अतिवाद, कट्टरवाद और अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के उभरने से बेचैन है। फ्रांस के राष्ट्रपति ने मुंबई हमले के मास्टर माइंड, जाकी-उर-रहमान लखवी को पाकिस्तान द्वारा रिहा करने की आलोचना की।[28] पश्चिमी एशिया तथा अफ्रीकी क्षेत्रों में भारत और यूरोप दोनों के मूलभूत राजनैतिक तथा आर्थिक हित जुड़े हैं। पश्चिमी एशिया तथा अफ्रीकी महाद्वीप में बढ़ती अस्थिरता, आतंकवादी गतिविधियां तथा हिंसा दोनों ही देशों के लिए प्रमुख चिंता के विषय हैं, जो इन चुनौतियों से प्रभावी तरीके से निपटने के लिए एक समान दृष्टिकोण की मांग करते हैं। नई दिल्ली इस वर्ष अफ्रीका शिखर सम्मेलन की मेजबानी करेगा और यह पश्चिम एशिया में अपनी भागीदारी का और विस्तार करना चाहेगा। सी राजा मोहन का तर्क है, "यदि भौगोलिक क्षेत्र विदेश नीति को व्यवस्थित करने में एक सा रवैया अपनाएं तो विश्व भर के कुछेक प्रमुख देशों के पास द्विपक्षीय संबंधों को प्रोत्साहित करने का कोई विकल्प नहीं बचेगा।"[29]

प्रधानमंत्री के जर्मनी तथा फ्रांस दौरे ने यूरोप के साथ भारत की भागीदारी को पुन: ऊर्जामय बनाने की आशाएं जगा दी हैं। मई 2014 में कार्यकाल प्रारंभ करने के बाद प्रधानमंत्री मोदी भारत की विदेश नीति को पुन: निर्धारित करने में अति सक्रिय रहे हैं। दक्षिण अफ्रीकी देशों, जापान, आस्ट्रेलिया और अमरीका से लेकर हिन्द महासागर के देशों तक के उनके विदेश दौरों को अथवा बहुपक्षीय एवं क्षेत्रीय शिखर सम्मेलनों में उनकी भागीदारी को संबंधित देशों के साथ भारत के संबंध बढ़ाने में सफल माना गया है। यूरोप-भारत वार्ताओं पर उनके बौद्धिक भाषण दर्शाते हैं कि प्रधानमंत्री मोदी का यूरोप का दौरा भविष्य में संबंधों की दिशा तय करने में एक सकारात्मक कदम रहा है। एक जीवंत 'लिंक वेस्ट' नीति अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में देश

के आर्थिक विकास, प्रौद्योगिकीय उन्नति और राजनीतिक स्थिति को सुविधाजनक बनाने में 'एक्ट ईस्ट' नीति को प्रभावी ढ़ंग से संपूरित करेगी।[30] देश का उभरता मध्यम वर्ग शिक्षा, कौशल विकास, व्यावसायिक कार्यकलाप, पर्यटन आदि के क्षेत्रों में वैश्विक स्तर पर और अधिक ध्यानाकर्षण की चाह रखता है। यूरोपीय अर्थव्यवस्था अत्यधिक लाभान्वित होगी, यदि वे ऐसी व्यापार क्षमताओं का उपयोग करने और भारतीय समाज की आकांक्षाओं को स्वरूप प्रदान करने में एक व्यवहार्य व्यापार मॉडल के साथ न्यायोचित तरीके अपनाएं। शिक्षा से लेकर कौशल विकास तथा शहरी विकास तक फ्रांस और जर्मनी के साथ हस्ताक्षरित करार, देश की नौजवान पीढ़ी के समाजिक एवं व्यवसायिक पहलुओं के लिए अत्यधिक प्रासंगिक होंगे।

निष्कर्ष

यूरोपीय केन्द्रीय बैंक ने इस वर्ष की यूरोजोन वृद्धि भविष्यवाणी को एक प्रतिशत से बढ़ाकर 1.5 प्रतिशत कर दिया है[31] और जर्मन सरकार की वार्षिक रिपोर्ट में उल्लेख है कि अर्थव्यवस्था भी 'अच्छी स्थिति' में है।[32] लेकिन यूरोजोन में आर्थिक प्रदर्शन/निष्पादन में विविधता रहेगी। यूरोप में राजनैतिक रूझानों में उल्लेखनीय परिवर्तन पहले ही देखने में आया है। यूरोपीय संसद 2014 के चुनावों में यूरोस्कोपिक तथा कट्टर दक्षिणपंथी दलों के उभरने को "राजनैतिक भूचाल"[33] का नाम दिया गया है। परम्परागत दलों के राजनैतिक आधार खिसकते प्रतीत हो रहे हैं। यूक्रेन को लेकर रूस तथा यूरोपीय संघ (EU) के बीच भू-राजनैतिक प्रतियोगिता इस क्षेत्र की सामरिक चिंताओं में वृद्धि करती है। ऐसे राजनैतिक तथा रणनीतिक परदृश्यों के बीच नई दिल्ली यूरोप के साथ अपने संबंधों को कैसा स्वरूप प्रदान करेगा, यह क्षेत्रीय एवं वैश्विक मुद्दों के प्रति इसके रूख व इसके नीतिगत उद्देश्यों तथा आगामी सहक्रियाओं पर निर्भर करेगा। दोनों ही देश - फ्रांस और जर्मनी - न केवल भारत में आर्थिक बदलाव लाने में योगदान देने में, बल्कि वैश्विक स्तर पर ज्यादा बड़ी भूमिका निभाने की भारत की इच्छा को सुगम बनाने में महत्वपूर्ण हैं। भारत की लोकतांत्रिक साख, जनसांख्यिकीय लाभांश और आर्थिक जीवंतता द्विपक्षीय एवं वैश्विक दोनों स्तरों पर यूरोपीय राजनैतिक तथा आर्थिक मूल्यों व नीतियों के साथ वृहत्तर अनुकूलता विकसित करने के लिए अनिवार्य होगी। उभरते बाज़ारों से आर्थिक संपर्क का विस्तार यूरोपीय राष्ट्रों को अपनी आर्थिक वृद्धि को गति प्रदान करने के ठोस अवसर उपलब्ध कराता है। व्यापार, वृद्धि और रोजगार पर यूरोपीय आयोग के एक दस्तावेज में स्पष्ट उल्लेख है कि व्यापार वर्तमान आर्थिक संकट में 'सार्वजनिक वित्त का आहरण किए बिना अत्यंत आवश्यक वृद्धि प्राप्त करने तथा रोजगार के सृजन का एक महत्वपूर्ण साधन' बन गया है।'---(व्यापार) यूरोप को नए वैश्विक विकास केन्द्रों से जोड़ता है और यह उत्पादकता लाभों का अद्वितीय स्रोत है।'[34] भारत मध्यम वर्ग की विशाल जनसंख्या और पश्चिम के ही समान उदार मूल्यों पर आधारित लोकतांत्रिक प्रणाली द्वारा शासित एक विशाल बाज़ार

बन सकता है। प्रधानमंत्री मोदी के दौरे ने 'लिंक वेस्ट' नीति को बड़ा प्रोत्साहन दिया है। हस्ताक्षरित करारों और वार्ताओं में व्यक्त प्रतिबद्धताओं में यूरोप के साथ भारत की भागीदारी हेतु नए आधार तैयार करने की क्षमता तो है, लेकिन उन्हें प्रभावी तथा तीव्र गति से वास्तविकता में परिवर्तित करने में ही इसकी सफलता निहित है।

**डॉ. दिनोज कु. उपाध्याय विश्व मामलों की भारतीय परिषद, नई दिल्ली में अनुसंधान अध्येता हैं।*

समाप्ति नोट

[1] हैदर, सुहासिनी, "मोदी ने ब्रुसेल्स की यात्रा रद्द की", *द हिंदू*, 16 मार्च, 2015। http://www.thehindu.com/todays-paper/modi-scraps-brussels-visit/article6997080.ece (5 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया)।

2 ओ'ब्रायन, जेम्स, "यूरोपीय संघ-भारत संबंधों में गिरावट के "गंभीर परिणाम" होंगे", *द पार्लियामेंट पत्रिका*, मार्च, 2015 https://www.theparliamentmagazine.eu/articles/news/deterioration-eu-india-relations-would-have-dire-consequences (5 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[3] पूर्वोक्त।

[4] मुखर्जी, भास्वती, "इटली ने माहौल बिगाड़ा", *द ट्रिब्यून*, 28 अप्रैल, 2015 http://www.tribuneindia.com/news/comment/italy-plays-the-spoilsport/73097.html (29 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया); सिन्धु, डब्ल्यूपीएस, "नरेंद्र मोदी ने यूरोप से संपर्क किया, (यूरोपीय) संघ से नहीं", लाइव मिंट, 26 अप्रैल, 2015 http://www.livemint.com/Opinion/h17gtBQPTDj2vgpb2hPEeN/Modi-engages-Europe-sans-the-Union.html (28 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[5] सोलाना, जेवियर, "यूरोपीय संघ और भारत", भारत-अमेरिकी नीति ज्ञापन, ब्रूकिंग्स, सितम्बर 2014 http://www.brookings.edu/~/media/research/files/opinions/2014/09/23%20us%20india%20policy%20memo/23%20european%20union%20india%20solana.pdf (29 दिसंबर, 2014 को एक्सेस किया गया)।

[6] राम, विद्या, "यूरोप के साथ हमेशा की तरह व्यापार", *बिजनेस लाईन*, 1 अप्रैल, 2015 http://www.thehindubusinessline.com/opinion/columns/vidya-ram/business-as-usual-witheurope/article7058202.ece(2 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[7] प्रधान मंत्री कार्यालय, भारत सरकार, "प्रधानमंत्री ने अपनी आगामी 3-राष्ट्रों के दौरे के बारे में ट्वीट किया", 28 मार्च, 2015 http://pmindia.gov.in/en/news_updates/pm-tweets-about-his-upcoming-3-nation-tour/ (3 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[8] ब्रूकिंग्स, "विशेषज्ञों ने भारत के चुनावों में भाजपा और नरेंद्र मोदी की ऐतिहासिक जीत की चर्चा की", 19 मई, 2014 http://www.brookings.edu/blogs/brookings-now/posts/2014/05/experts-discuss-historic-bjp-narendra-modi-victory- india-elections (5 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया)। साहू, निरंजन, "मोदी की विदेश नीति के राज की व्याख्या", *द कार्नेगी एंडोमेंट*, 23 सितंबर, 2014 http://carnegieendowment.org/2014/09/23/decoding-modi-s-foreign-policy (7 मार्च, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[9] यंग्स, रिचर्ड, *संकट की अनिश्चित विरासत: यूरोपीय विदेश नीति का भविष्य से सामना,* कार्नोगी एन्ड्रॉमेंट फॉर इंटरनेशनल पीस, वाशिंगटन 2014,पृ. 51.

[10] मिश्र, असित रंजन, "नरेंद्र मोदी कहते हैं, भारत को पूर्वोन्मुख होने के साथ-साथ पश्चिम से जुड़ना चाहिए", *लाइव मिंट*, 26 सितंबर, 2014 http://www.livemint.com/Industry/PE5PkzPctbNxPe7njhTppM/Narendra-Modi-says-India-should-Link-West-Look- East.html (6 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[11] यह अवलोकन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मई 2014 में सत्ता में आने के बाद उद्योग और व्यापार जगत के नेताओं और मुख्य कार्यकारी अधिकारियों (सीईओ) के साथ विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित है, जो राष्ट्रीय दैनिक समाचार पत्रों में प्रकाशित हुए।

[12] चौधरी, सुवाश्री और दासगुप्ता, नेहा, "मोदी ने इंडिया आउटलुक को 'सकारात्मक' बताया, रेटिंग्स के उन्नयन की ओर बढ़े" *रायटर*, 9 अप्रैल, 2015 http://in.reuters.com/article/2015/04/09/india-moody-s-idINKBN0N004S2015040(15 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया)

[13] अय्यर, पी वैद्यनाथन, "इस बीच, वे यूरोपीय संघ से कहते हैं: यह परिवर्तन की हवा है, इससे लाभ उठाएं", इंडियन एक्सप्रेस, 15 नवम्बर, 2014 http://indianexpress.com/article/india/india-others/meanwhile-he-tells-eu-wind-of-change-test-it/ (2 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया)

[14] "आईएमएफ प्रमुख भारत को विश्व अर्थव्यवस्था में "उज्ज्वल स्थल बताते हैं", एएफपी, 16 मार्च, 2015 http://www.businessinsider.com /afp-imf-chief-hails-india-as-bright-spot-in-world-economy-2015-3 (10 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[15] "भारत 36 राफाल वायुयान तैयार हालत में खरीदेगा" *द हिंदू*, 10 अप्रैल, 2015 http://www.thehindu.com/news/national/prime-minister-narendra-modis-visit-to-france/article7090006.ece (11 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[16] पूर्वोक्त।

[17] पूर्वोक्त।

[18] संजय, पी आर, "नरेंद्र मोदी ने 36 राफेल जेट विमानों का आर्डर दिया, फ्रांस के साथ 17 करारों पर हस्ताक्षर किए", *लाइव मिंट*, 10 अप्रैल, 2015 http://www.livemint.com/Politics/j2pvz6bOAL6DUz9lnUnmxM/India-expects-progress-in-Rafale-deal-talks-with-France-as-Mhtml (12 अप्रैल, 2015 तक पहुँचा)।

[19] विदेश मंत्रालय, भारत सरकार, भारत-जर्मनी संबंध, दिसंबर 2014 http://www.mea.gov.in/Portal/ForeignRelation/Germany_Dec2014.pdf (16 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[20] जर्मनी संघीय गणराज्य का दूतावास, "भारत में जर्मन निवेश", http://www.india.diplo.de/Vertretung/indien/en/10__Economy/bilateral/German__Investment__in__India.html (8 मई, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[21] कपूर, हरीश, *भारत के प्रधानमंत्रियों की विदेशी नीतियां*, (नई दिल्ली: लांसर इंटरनेशनल, 2009), पृ. 307

[22] "भारत, यूरोपीय संघ ने नई 'डिजिटल भारत' साझेदारी की', द इकोनॉमिक टाइम्स, 15 अप्रैल, 2015 http://articles.economictimes.indiatimes.com/2015-04-15/news/61180377_1_india-inc-technology-and-innovation-smart-cities (6 मई, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[23] "मोदी, मर्केल ने हन्नोवर बैठक/मेस में व्यापार संबंधों को घनिष्ठ बनाने का प्रयास किया", *डी डब्ल्यू*, 13 अप्रैल, 2015 http://www.dw.de/modi-merkel- seek-deeper-trade-ties-at-hannover-messe/a-18377297 (15 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[24] "भारत यूरोपीय संघ के साथ व्यापार वार्ता को पुन प्रारंभ करने के लिए तैयार", *यूरेक्टिव*, 24 मार्च, 2015 http://www.euractiv.com/sections/trade-society/india-ready-revive-trade-talks-eu-313191 (15 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[25] राम, विद्या, "यूरोप के साथ हमेशा की तरह व्यापार", *बिजनेस लाइन*, 1 अप्रैल, 2015

[26] कृष्णन, अनंत, "बीजिंग विद्वानों का कहना है कि मोदी की यूरोप यात्रा ने निवेशकों को चीन से हटने के लिए प्रलोभित किया", *इंडिया टूडे*, 9 अप्रैल, 2015 http://indiatoday.intoday.in/story/modi-europe-trip-could-lure-investors-away-from-china/1/429361.html (15 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[27] मुखोपाध्याय, प्रियम, "मेक इन इंडिया के हमारे राष्ट्रीय आंदोलन में शामिल हों: मोदी", *द न्यू इंडियन एक्सप्रेस*, 13 अप्रैल, 2015 http://www.newindianexpress.com/business/news/Join-Our-National-Movement-of-Make-in-India-Modi/2015/04/13/article2762170.ece (15 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[28] "26/11 के मास्टरमाइंड जकी-उर-रहमान लखवी की रिहाई से गहरा सदमा लगा: फ्रांसीसी राष्ट्रपति फ्रांसवां आलॉ द', *एनडीटीवी*, 11 अप्रैल, 2015 http://www.ndtv.com/world-news/deeply-shocked-at-26-11-mastermind-zaki-your-rehman- lakhvis-release-french-president-francois-hollande-754014 (12 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[29] राजामोहन, सी, "मोदी और मध्य शक्तियां", *इंडियन एक्सप्रेस*, 9 अप्रैल, 2015 http://indianexpress.com/article/opinion/columns/modi-and-the-middle-powers/ (14 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[30] चौलिआ, श्रीराम, "'एैक्ट इस्ट' की सराहना: प्रधानमंत्री मोदी का यूरोप तथा कनाडा का दौरा 'लिंक वेस्ट' एजेंडा को आगे बढ़ाने का अवसर", *द इकोनॉमी टाइम्स*, 12 अप्रैल, 2015 http://articles.economictimes.indiatimes.com/2015-04ttp://articles.economictimes.indiatimes.com/015-04- 12/news/61066324_1_pm-modi-act-east-narendra-modi (14 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[31] "ईसीबी ने यूरोजोन विकास पूर्वानुमान को वर्ष 2015 के लिए 1.5% तक बढ़ाया", *बीबीसी*, 5 मार्च, 2015 http://www.bbc.com/news/business-31750117 (25 मार्च, 2015 को एक्सेस किया गया)

[32] थॉमस, एंड्रिया, "जर्मनी ने नौकरियों, खपत पर 2015 विकास पूर्वानुमान को बढ़ाया", *द वॉल स्ट्रीट जर्नल*, 28 जनवरी, 2015 http://www.wsj.com/articles/germany-raises-2015-growth-forecast-on-jobs-consumption-1422442887(2 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[33] "यूरोसेप्टिक" भूकंप ने यूरोपीय संघ चुनावों को हिलाकर रख दिया", *बीबीसी*, 26 मई, 2014 http://www.bbc.com/news/world-europe-27559714 (2 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया)।

[34] यूरोपीय आयोग, "व्यापार, विकास और रोजगार: यूरोपीय परिषद को आयोग का योगदान", फरवरी 2013 http://trade.ec.europa.eu/oclib/docs/2013/april/tradoc_151052.pdf (20 अप्रैल, 2015 को एक्सेस किया गया)।

***